चन्दा झा

जन्म : 20 जनवरी 1831 ई० ।

मृत्यु : 14 दिसम्बर 1907 ई० ।

जन्म-स्थान : पिण्डारूछ (दरभंगा)।

कृति : **'मिथिला भाषा रामायण', 'गीत सुधा', 'गीत सप्तशती', 'वाताह्वान', 'चन्द्र पद्यावली', 'चन्द्र रचनावली', 'लक्ष्मीश्वर-विलास'**, विद्यापतिकृत **'पुरुष परीक्षा'**क अनुवाद आदि ।

बहुआयामी प्रतिभासँ युक्त कवीश्वर चन्दा झा मैथिली साहित्यक मध्य ओ आधुनिक युगक सन्धिकालक कवि छथि । विषयवस्तु ओ भाषा– दुनू दृष्टिएँ ई नवयुगीन बेसी छथि । मध्यकालीन कवि लोकनिक वर्ण्य-विषयक आलम्बन जतय राधा-कृष्ण मात्र रहलनि तथा राम सदृश उदात्त ओ आदर्श चरित्र साहित्य मध्य उपेक्षित रहल ओतय चन्दा झा पहिल कवि भेलाह जे रामक आदर्श चरित्रकेँ प्रबन्ध काव्यक माध्यमे मैथिली-साहित्य मध्य अधिष्ठित कयलनि ।

ई अपन जीवन विभिन्न राजदरबारक आश्रयमे बितौलनि । दस वर्ष धरि नरहन स्टेटक राजकुमार विश्वेश्वर नारायण सिंहक संग, तदुपरांत दरभंगाक महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह एवं हुनक अनुजक दरबारमे अपन जीवन बितौलनि ।

काव्य-संदर्भ : प्रस्तुत पद्य **'मिथिला-भाषा रामायण'**क बालकाण्डक छठम अध्यायसँ लेल गेल अछि । एहिमे मिथिलाक प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक ओ भौगोलिक स्थितिक वर्णन भेल अछि । एतय पशु-पक्षी मदमस्त भऽ बिना कोनो डर-भयकेँ स्वच्छन्द विचरण करैत अछि । धार्मिक वातावरण एहन जे वर्षा समय पर होइत अछि तथा अन्नक प्रचुरता अछि । ककरो कोनो प्रकारक दुख-तकलीफ नहि छैक । मिथिला धन-धान्यसँ परिपूर्ण अछि । पानि अमृत समान अछि । सुग्गा सेहो शास्त्रक चर्चा करैत देखल जाइत अछि ।

मिथिला वर्णन

।। वसन्त-तिलका ।।

की दिव्य भूमि मिथिला हम आबि गेलौँ ।
देखैत मात्र मन लक्ष्मण तृप्त भेलौँ ॥
की दिव्य फूल फल वृक्ष अनन्त धान ।
पक्षी विलक्षण करै अछि रम्य गान ॥

।। नाराच ।।

प्रपूर्ण सन् तडाग की सुधा समान वारिसौँ
विचित्र पद्मिनी-वनी विहङ्ग वारि-वारिसौँ ।
द्विरेफ गुञ्जि गुञ्जि केँ महा मदान्ध घूमिकेँ,
सरोजिनीक अङ्ग सुप्त वार वार चूमिकेँ ॥

।। च चला ।।

शालि-गोप गीतिकाँ सुप्रीति रीति शूनि शूनि ।
खेत शस्य खाथि नै कुरङ्ग आँखि मूनि मूनि ॥
सत्य तीरहूति यज्ञ-भूमि पुण्य देनिहारि ।
शास्त्रकेँ बजैत बेस कीर बैसि डारि डारि ॥

।। रूपमाला ।।

नदी-मातृक क्षेत्र सुन्दर शस्य सौँ सम्पन्न ।
समय सिर पर होय वर्षा बहुत सञ्चित अन्न ॥
दयायुत नर सकल सुन्दर स्वच्छ सभ व्यवहार ।
सकल-विद्या-उदधि मिथिला विदित भरि संसार ॥

●

शब्दार्थ– प्रपूर्ण = भरल; तडाग = तालाब, पोखरि; सुधा = अमृत; वारि = पानि; द्विरेफ = भौंरा; सरोजिनी = कमलिनी; शालि = फसल, जजात; कीर = सुग्गा।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. मिथिलाकेँ दिव्य भूमि किएक कहल गेल अछि ?
2. 'मिथिला हम आबि गेलौं' के किनकासँ कहैत छथि ?
3. 'सुधा समान वारिसौँ' सँ कविक की अभिप्राय छनि ?
4. 'तीरहूति' शब्दक अर्थ लिखू । पाठ्य पुस्तकक एक अन्य पाठमे सेहो एहि शब्दक व्यत्पति पर विचार कयल गेल अछि । ताकिकेँ परम्पराक आलोकमे ओकर व्याख्या करू ।
5. मिथिलाकेँ नदीक मातृक किएक कहल गेल अछि ?

गतिविधि :

1. एहिठामक सुग्गा शास्त्र बजैत अछि, एकर उदाहरण जँ ध्यान पर हो तँ सविस्तार वर्णन करू ।
2. मण्डन मिश्रकेँ जनैत छियनि ? जँ हाँ तँ चर्चा करू।
3. मिथिलामे प्रवाहित नदी सभक सूची सभ छात्र मिलि कऽ बनाऊ ।
4. मिथिला वर्णन आन दोसरो कवि कयलनि अछि ? अन्य छात्र लोकनिसँ विमर्श करू।
5. कमलक कोनो दूटा पर्यायवाची शब्द लिखू ।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे मण्डन मिश्र आ शंकराचार्यक बीच शास्त्रार्थक चर्चा कऽ मिथिलाक महिमा पर प्रकाश देथि।

(ख) मिथिला वर्णन शीर्षक ताकयमे छात्रकेँ सहयोग करथि।

(ग) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे ओ मिथिलाक बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ताक ज्ञान छात्रकेँ करा देथि।

(घ) शिक्षककेँ चाहियनि जे ओ अन्यान्य मिथिलाक पँडितक विशेषताक कथा कहथि।

(ङ) रामकाव्यक परम्पराक आलोकमे अन्य भाषामे प्रकाशित रामायण यथा संस्कृतमे लिखल वाल्मीकिकृत 'रामायण', अवधीमे रचित तुलसीकृत 'रामचरित मानस' बंगला भाषामे कृत्तिवासी-कृत 'रामायण', तमिलक महाकवि कम्बक 'कम्ब रामायण', तेलुगूक 'रंग रामायण' आदिक चर्च छात्रक बीच होयबाक चाही । □